P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-9, ISSUE-4 May -2021
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

# जनसंचार में हिन्दी की भूमिका

# Role of Hindi in Mass Communication

Paper Submission: 19/04/2021, Date of Acceptance: 07/05/2021, Date of Publication: 14/05/2021

**अरुण कुमार**
सह प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रामपुर, उ0प्र0, भारत

**सारांश**

संचार शब्द सम्+चर् शब्दों में घञ् प्रत्यय लगने से बना है, जिसका अर्थ होता है 'गति', 'गमन', या 'यात्रा। यह दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच भावात्मक सम्बन्धों को दर्शाता है। किसी भी भाषा के गर्भ में जनसंचार अथवा भावों के सम्प्रेषण की मूल भावना सन्निहित होती है। जो भाषा भावों का सम्प्रेषण जितनी सहजता एवं सरलता से करने में सक्षम होगी वह जनसंचार के क्षेत्र में अपनी पैठ बनाने में उतनी ही समर्थ होगी। संचार मानव के जीवन का अनिवार्य अंग हैं। भोजन, पानी, धूप, हवा की तरह मनुष्य इसे अपने जीवन से अलग नहीं कर सकता। जैसे शरीर के विकास के लिए धूप, हवा, पानी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार सामाजिक विकास के लिए संचार की आवश्यकता होती है। संचार का सबसे प्रमुख साधन भाषा है। भाषा न केवल भावों की संवाहक अपितु यह सांस्कृतिक विरासत का आधार स्तम्भ है। यह किसी भी देश के भूत और वर्तमान कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक परिस्थिति का दर्पण होती है। इसी के आधार पर उस देश का भविष्य निर्धारित होता है। हिन्दी भाषा आज विश्व के बहुत बड़े क्षेत्र में प्रयुक्त हो रही है। यह एक ओर कम्प्यूटर, इंटरनेट, टैलेक्स, तार, इलेक्ट्रॉनिक, टेलीप्रिंटर, दूरदर्शन, रेडियो, अखबार, डाक, फिल्म और विज्ञापन आदि जन संचार के माध्यमों की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने की ओर अग्रसर हो रही है, वहीं दूसरी ओर शेयर बाजार, रेल, बीमा, उद्योग, बैंक, कृषि, चिकित्सा, शिक्षा, कॉलेज, विश्वविद्यालय, सरकारी व अर्द्ध सरकारी कार्यालय में भी कमोवेश प्रयोग की जा रही है। हिन्दी समस्त हिंदुस्तान की भाषा है। यह अधिकांश भारतीयों के हृदय से जुड़ी हुई भाषा है। इसके भावों को साक्षर–निरक्षर, मजदूर–कामगार, गाँव एवं सीमांत प्रदेश में रहने वाले लोग भी सर्वथा समझते हैं। उनके आस्था एवं दृष्टिकोण इसी भाषा में पलते, बढते, बनते और बिगड़ते हैं। किन्तु भारत में विशेष रूप से चिकित्सा विज्ञान, व्यवसाय ,उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग अपेक्षाकृत बहुत कम किया जा रहा है। इन क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण हिन्दी पाठ्य पुस्तकों एवं अध्ययन सामग्रियों का अभाव है, जिसके कारण हम अपनी भाषा में तकनीकी आविष्कार करने में अपने देश की पूर्ण प्रतिभा का प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं। इसी कारण हिन्दी को रोजगार की भाषा के रूप में हमारे ही देश के लोग स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं और हिन्दी के प्रति युवाओं में अरुचि विकसित होती जा रही है। इसलिए हिन्दी को मूल्यों के संरक्षण की भाषा बनाने के साथ–साथ सूचना, संचार तकनीक, शिक्षा, चिकित्सा, अनुसंधान, वाणिज्य–व्यापार रोजगार आदि की भाषा बनाने के लिए भागीरथ प्रयास करना होगा। क्षेत्र, धर्म, वर्ग और राजनीति की भावना से ऊपर उठकर देश की सरकार एवं शासन–प्रशासन को हिन्दी भाषा के अनिवार्य प्रयोग हेतु शासनादेश पारित करना होगा। ईमानदारी से इसे राजभाषा के रूप में स्वीकार करना होगा। इसे सूचना, तकनीकी, विज्ञान एवं शिक्षा की अनिवार्य भाषा के रूप में विकसित करना होगा।

Communication is an essential part of human life. Like food, water, sun, air, man cannot separate it from his life. Just like sun, air, water are required for the development of the body, similarly communication is required for social development. Language is the most important means of communication. Language is not only the conductor of emotions but it is the pillar of cultural heritage. It is a mirror of the past and present social, cultural, economic and educational situation of any country. Based on this, the future of that country is determined. Hindi language is being used in a large area of the world today. Hindi is the language of all Hindustan. It is a language associated with the heart of most Indians. Literally-illiterate, laborers, laborers, people living in villages and marginal states also understand its sentiments. Therefore, making Hindi the language of preservation of values, as well as information, communication techniques, education, medicine, research, commerce-trade employment, etc. Bhagiratha will have to make efforts. Rising above the spirit of region, religion, class and politics, the government and administration of the country must pass a mandate for the compulsory use of Hindi language. It has to be honestly accepted as the official language. It has to be developed as a mandatory language of information, technology, science and education.

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-9, ISSUE-4 May -2021
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

**मुख्य शब्द :** जनसंचार ,संचार, सम्प्रषेण, अनुसंधान, कम्युनिकेशन, दूरदर्शन, इंस्टाग्राम, इंटरनेट, रीतिकाल, तकनीकी, अभियांत्रिकी, कम्प्यूटर वेबसाइट,
Mass Communication, Communication, Communication, Research, Communication, Doordarshan, Instagram, Internet, Recital, Technical, Engineering, Computer Website

**प्रस्तावना**

किसी भी भाषा के गर्भ में जनसंचार अथवा भावों के सम्प्रेषण की मूल भावना सन्निहित होती है। जो भाषा भावों का सम्प्रेषण जितनी सहजता एवं सरलता से करने में सक्षम होगी वह जनसंचार के क्षेत्र में अपनी पैठ बनाने में उतनी ही समर्थ होगी। भारत में जनसंचार के स्वरूप और महत्त्व का उल्लेख प्राचीन काल से ही मिलता रहा है। महर्षि नारद द्वारा तीनों लोकों की बातों को निर्बाध रूप से इधर–उधर विस्तारित करने का उल्लेख मिलता है। महाभारत के प्रमुख पात्र संजय द्वारा सम्पूर्ण महाभारत के युद्ध का समाचार धृतराष्ट्र तक संप्रेषित करने का उल्लेख मिल मिलता है। 'सम्प्रषेण (कम्युनिकेशन) की आवश्यकता मनुष्य को उसी भाँति है जिस भाँति भोजन और पानी। यह एक व्यापक अवधारणा है जिसमें मनुष्य द्वारा अभिव्यक्ति के सभी प्रकार के माध्यम–शब्द–चित्र, संगीत, अभिनय, मुद्रण आदि समाहित किए जा सकते हैं।'[1]

संचार मानव के जीवन का अनिवार्य अंग हैं। भोजन, पानी, धूप, हवा की तरह मनुष्य इसे अपने जीवन से अलग नहीं कर सकता। जैसे शरीर के विकास के लिए धूप, हवा, पानी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार सामाजिक विकास के लिए संचार की आवश्यकता होती है। संकेत, हाव–भाव, ध्वनियाँ, गीत, नृत्य सभी के द्वारा संवाद स्थापित किया जा सकता है। समाज का कोई भी मनुष्य संचार के अभाव में समाज से नहीं जुड़ सकता। संक्षेप में कहें तो संचार रोटी, कपड़ा और मकान की भाँति मानव जीवन की एक मूलभूत आवश्यकता है। संचार का सबसे प्रमुख साधन भाषा है। यह किसी भी माध्यम से सम्प्रेषण का साधन बन सकती है, जैसे रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट उपग्रह अथवा कोई अन्य तकनीकी माध्यम। ''हिन्दी विश्व की दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह भारत की प्रथम आधिकारिक भाषा है। यह संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। यद्यपि भारतीय संविधान में किसी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिया गया है। 'भारत में हिन्दी विभिन्न भारतीय राज्यों की 14 आधिकारिक भाषाओं और क्षेत्रों की बोलियों का उपयोग करने वाले लगभग एक अरब लोगों में से अधिकांश की दूसरी भाषा है। हिन्दी भारत में सबसे अधिक सम्प्रेषण की भाषा है।'[2] वैश्विक स्तर पर भी यह व्यापक रूप से अध्ययन–अध्यापन, पठन–पाठन, मीडिया एवं व्यवसाय के क्षेत्र में प्रयोग की जाने वाली भाषा है। इन तथ्यों से इस बात की पुष्टि हो जाती है कि संचार के क्षेत्र में हिन्दी की भूमिका एवं उत्तरदायित्व उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

भाषा, संस्कृति व संचार का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। भाषा न केवल भावों की संवाहक अपितु यह सांस्कृतिक विरासत का आधार स्तम्भ है। यह किसी भी देश के भूत और वर्तमान कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक परिस्थिति का दर्पण होती है। इसी के आधार पर उस देश का भविष्य निर्धारित होता है। इस शोध पत्र के माध्यम से ''जनसंचार के क्षेत्र में हिन्दी भाषा की भूमिका'' विषय पर समसामयिक विश्लेषण किया जाएगा। आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बदलते परिवेश के अनुकूल हिन्दी भाषा के बदलते स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए उसके वर्तमान उपयोगिता एवं महत्त्व के विषय में आवश्यक तथ्यों का उद्घाटन किया जाएगा।

**सिंहावलोकन**

हिन्दी भाषा आज विश्व के बहुत बड़े क्षेत्र में प्रयुक्त हो रही है। यह एक ओर कम्प्यूटर, इंटरनेट, टैलेक्स, तार, इलेक्ट्रॉनिक, टेलीप्रिंटर , दूरदर्शन, रेडियो, अखबार, डाक, फिल्म और विज्ञापन आदि जन संचार के माध्यमों की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने की ओर अग्रसर हो रही है, वहीं दूसरी ओर शेयर बाजार, रेल, बीमा, उद्योग, बैंक, कृषि, चिकित्सा, शिक्षा, कॉलेज, विश्वविद्यालय, सरकारी व अर्द्ध सरकारी कार्यालय में प्रयोग की जा रही है। हिन्दी का इतने व्यापक क्षेत्र में प्रयोग हिन्दी के लिए एक सुखद पक्ष है किंतु वर्तमान वैश्विक, सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक, शैक्षणिक एवं विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जिस तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है उतनी तीव्र गति से हिन्दी भाषा इन क्षेत्रों में अपनी पकड़ मजबूत करने में समर्थ नहीं हो पा रही है। भारत में विशेष रूप से चिकित्सा विज्ञान, व्यवसाय, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग अपेक्षाकृत बहुत कम किया जा रहा है। इन क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण हिन्दी पाठ्य पुस्तकों एवं अध्ययन सामग्रियों का अभाव है, जिसके कारण हम अपनी भाषा में तकनीकी आविष्कार करने में अपने देश की पूर्ण प्रतिभा का प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं। इसी कारण हिन्दी को रोजगार की भाषा के रूप में हमारे ही देश के लोग स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं और हिन्दी के प्रति युवाओं में अरुचि विकसित होती जा रही है। यह हिन्दी के लिए सोचनीय विषय है।

जनसंचार के क्षेत्र में हिन्दी की समस्याओं को दूर करने के लिए विद्वानों द्वारा अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा संस्थान की स्थापना की गई है। सरकार द्वारा राजभाषा आयोग का गठन भी किया गया। इस पर अनेक पुस्तकें एवं पत्र पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। *पुस्तकों की शृंखला* में ''विश्व पटल पर हिन्दी''[3], ''भूमंडलीकरण, निजीकरण व हिन्दी''[4], ''प्रयोजननमूलक हिन्दी की नयी भूमिका''[5], ''हिन्दी भाषा का प्रयोजन मूलकता एवं आयाम''[6] ''हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार''[7] आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

इस विषय पर ''संचार माध्यमों में हिन्दी अनुवाद की भूमिका''[8] ,''शैक्षणिक कार्यों में इंटरनेट की भूमिका– एक अध्ययन''[9] आदि *शोध पत्रों* का प्रकाशन भी किया गया किंतु इनमें समसामयिक संदर्भों में हिन्दी का प्रयोग एवं महत्त्व पर अपेक्षाकृत कम प्रकाश डाला गया है।

वर्तमान संदर्भों में विश्व बाजार, विश्व में जनसंख्या के आनुपातिक प्रतिनिधित्व, अथवा शिक्षा, साहित्य व अनुसंधान विषयक हिन्दी का प्रयोग जिस स्तर पर होना चाहिए उस स्तर पर नहीं हुआ है। इसके सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषिक, एवं रोजगार विषयक महत्त्व को समझने की आवश्यकता अभी शेष है । संदर्भगत शोध पत्र इसी दिशा में किया गया एक सद्प्रयास है।

**संचार के क्षेत्र में हिन्दी की भूमिका**

संचार शब्द सम्+चर् शब्दों में घञ् प्रत्यय लगने से बना है, जिसका अर्थ होता है 'गति', 'गमन', या 'यात्रा। यह दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच भावात्मक सम्बन्धों को दर्शाता है। संचार शब्द के लिए लैटिन या लातिनी भाषा में ' कम्युनिस'(communis) शब्द का प्रयोग होता है, – इसका अर्थ है 'किसी वस्तु या विषय का सबके लिए साझा होना'[10] । इसे ही अंग्रेजी भाषा में कम्युनिकेशन (communication )कहते हैं। इसका अर्थ है– ''वह प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी भाव, विचार या जानकारी को हम दूसरों तक पहुँचाते हैं''। संचार इस संसार का ऐसा सत्य है जो प्राणि मात्र ही नहीं अपितु पेड़ पौधों में भी विद्यमान है''[11]।

संचार की प्रक्रिया लिखित एवं मौखिक शब्दों द्वारा सन्देश एवं समझ का विनियम तो करती ही है, संकेतों, हावों–भावों और मौन माध्यमों से भी वैचारिक लेन–देन करती है। संक्षेप में कहें तो संचार प्रत्यक्ष या परोक्ष तथा चेतन एवं अचेतन रूप से सम्प्रेषित भावनाओं , इच्छाओं एवं प्रवृत्तियों की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है ।

संचार का सम्बन्ध चूँकि जन–जन से जुड़ा हुआ है इसलिए संचार का समाज एवं समाज में रहने वाले लोगों से परस्पर गहरा सम्बन्ध है। पाश्चात्य विचारक पीटरसन रोवर्स एवं जानसन[12] ने संचार को सामान्य जनजीवन से जोड़ते हुए इसे 'जनसंचार' के नाम से भी अभिहित किया है। संचार से समाज के सभी वर्ग प्रभावित होते हैं । इसमें लिंग ,धर्म ,वर्ग एवं जाति का कोई भेद नहीं होता। संचार ही जनमानस को उद्वेलित एवं संगठित करता है। इससे नई चेतना, नई जागृति, सृजनशीलता, रचनात्मकता के भाव जाग्रत होते हैं, जिससे सामाजिक, आर्थिक ,राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विकास को नई दिशा मिलती है। इसीलिए देश में संचार के प्रमुख साधन मीडिया को राष्ट्र का चतुर्थ स्तम्भ कहा गया है। मीडिया का स्वतन्त्र होना लोकतन्त्र का प्रथम मानदंड है। इतिहास साक्षी है कि जब–जब संचार एवं मीडिया की स्वतन्त्रता में व्यवधान उत्पन्न हुए हैं तब–तब प्रगतिशीलता का पहिया रुक सा गया है। संचार केवल अध्ययन–अध्यापन, चिकित्सा–व्यवसाय, राजनीति एवं शासन–प्रशासन के मध्य सूचनाओं का आदान–प्रदान ही नहीं है बल्कि यह समग्र सामाजिक संघटकों –यथा लोक गीत , लोक साहित्य, प्रिंट मीडिया, (पत्र–पत्रिकाएँ, समाचार पत्र आदि) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया–(रेडियो, कम्प्यूटर , दूरदर्शन, इंटरनेट ,टीवी चैनल, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम) आदि का प्रमुख माध्यम हैं।

कोविड–19 जैसी वैश्विक महामारियों के अवसर पर संचार की प्रमुख भूमिका से कौन अनभिज्ञ होगा। इसके माध्यम से विश्व के कोने–कोने में बैठे लोगों को इस महामारी के प्रकोप से बचाया जा सका। इन्हें जागरूक करके सावधान किया गया। अधिकतर कार्य ऑनलाइन सम्पादित किए गए। दूर–दराज बैठे लोगों को उन्हीं की भाषा में इस भयानक त्रासदी से बचने के उपाय एवं उपचार से अवगत कराया गया एवं करोड़ों ज़िंदगियाँ बचाई जा सकीं। क्योंकि भारत की अधिकांश जनसंख्या हिन्दी बोलती एवं समझती है इसलिए कोविड–19 के विषय में स्लोगन, लेख, प्रचार , ई–संगोष्ठी , विभिन्न प्रतियोगिताएँ एवं सरकारी आदेश हिन्दी भाषा के माध्यम से प्रचारित एवं प्रसारित किए गए। आयुर्वेदिक औषधियों एवं उपचार के लिए सावधानियों को हिन्दी भाषा में प्रचारित व प्रसारित किया गया।

हिन्दी समस्त हिंदुस्तान की भाषा है। यह अधिकांश भारतीयों के हृदय से जुड़ी हुई भाषा है। इसके भावों को साक्षर–निरक्षर, मजदूर– कामगार , गाँव एवं सीमांत प्रदेश में रहने वाले लोग भी सर्वथा से समझते हैं। उनके आस्था एवं दृष्टिकोण इसी भाषा में पलते, बढते, बनते और बिगड़ते हैं।

इतना अवश्य है कि समय, परिवेश और स्थान के अनुसार संचार के माध्यमों के रूप में हिन्दी की स्थिति में परिवर्तन होता रहा है। आदिकाल अथवा वीरगाथा काल में इसी भाषा में राजाओं की प्रशंसा के गीत गाए गए। अपने राज्य एवं राज्य की जनता की रक्षा के लिए राजाओं को ना केवल अपने प्राण अपितु सर्वस्व न्यौछावर करने हेतु प्रेरित किया गया एवं जनता के प्रति उनके कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का बोध भी कराया। इस काल में साहित्य सृजन के माध्यम से जो भावों का संचार हो रहा था वह तीन धाराओं में बह रहा था। 'संस्कृत साहित्य प्रधानतः राज प्रवृत्ति को सूचित करती थी, अपभ्रंश साहित्य धार्मिक भावनाओं का संचार कर रही थी, तथा हिन्दी जनता की मानसिक स्थिति एवं भावनाओं का प्रतिनिधित्व कर रही थी।'[13]

'आदिकाल में हिन्दी भाषा, अपभ्रंश साहित्य के साथ–साथ चलती हुई क्रमशः जन भाषा के रूप में साहित्य रचना का माध्यम बन रही थी। नवीनतम खोजों से स्पष्ट हो चुका है कि जन भाषा के रूप में हिन्दी आठवीं शताब्दी में ही साहित्य का माध्यम बन चुकी थी तथा वह अपभ्रंश भाषा के साथ अपनी भूमि पर आगे भी बढ़ने लगी थी। फलस्वरूप अपभ्रंश में साहित्य लिखने वाले कवि अवसर पाकर हिन्दी में भी कविता किया करते थे। दोनों भाषाओं में यह स्पर्धा भक्तिकाल काल के आरम्भ तक चलती रही और अंत में एक दिन ऐसा भी आया, जब अपभ्रंश का खेमा छोड़कर सभी कवि हिन्दी के मार्ग पर अग्रसर होते गए। आदि कालीन साहित्य में प्रयुक्त हिन्दी कि यह बहुत बड़ी शक्ति है, जो उसकी सम्प्रेषण क्षमता की सूचना देती है । एक विशाल क्षेत्र की अनेक बोलियों से उसका एक सामान्य रूप विकसित हो रहा था।'[14]

इसी प्रकार भक्तिकाल में भी हिन्दी कबीर, सूर, तुलसी और जायसी के कंठ का हार बनी और इनके भाव अभिव्यक्ति का माध्यम भी। इस काल में अनेक कालजयी रचनाएँ जैसे– रामचरितमानस, बीजक , सूरसागर, पद्मावत के पद और दोहे घर–घर में गाए जाने लगे और

लोगों की धार्मिक सामाजिक परम्पराओं को मानकीकृत करने लगे। इनमें सर्वाधिक लोकप्रियता तुलसी के रामचरितमानस को मिली ।

रीतिकालीन कवियों ने राज्याश्रय में रहते हुए भी वे अब केवल राजाओं की प्रशंसा ही नहीं करते बल्कि राज दरबार से निकलकर कविता सामाजिक परिवेश एवं अनुभूतियों का विषय बनी। बिहारी के एक दोहे ने राजा जयसिंह की जीवन शैली को ही बदल दिया।[15] यद्यपि कि इस काल में फ़ारसी भाषा राजभाषा हो चली थी किंतु ब्रजभाषा अब भी काव्य सृजन की प्रमुख भाषा थी । इस पर फारसी भाषा के अलंकार प्रधान शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

आधुनिक काल (1850ई0) तक आते–आते कविता के साथ–साथ हिन्दी की अनेक गद्य विधाएँ भावों के सम्प्रेषण का माध्यम बनीं। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि–

"निज भाषा उन्नति अहै , सब भाषा को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल"।।

अब निबन्ध, नाटक ,कहानी, उपन्यास, एकांकी आदि के माध्यम से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपने सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक भावों और विचारों को जनसामान्य तक पहुँचाने लगे । राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत अनेक रचनाओं एवं पत्र–पत्रिकाओं को ब्रिटिश सत्ता का शिकार होना पड़ा। परन्तु इन रचनाओं ने देश में राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करने एवं समस्त भारत को एक राष्ट्र के रूप में पिरोने का कार्य किया। इससे गाँव से लेकर शहर तक एक नया सामाजिक एवं राजनीतिक वातावरण तैयार हुआ। पढ़े लिखे से लेकर अनपढ़ , ग्रामीण एवं कृषक–मजदूर अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुए। वह अपने अधिकार के लिए सत्ता के विरुद्ध संघर्ष, हड़ताल , तालाबंदी, असहयोग, आमरण अनशन जैसे कदम उठाने लगा।

वर्तमान में हिन्दी वैश्विक स्वरूप धारण कर चुकी है। विज्ञान–प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी कौशल से युक्त हिन्दी भाषा विश्व में अपने पाँव पसार रही है। यह प्रगतिशील विचारों से सम्पृक्त एवं रोजगार परक भाषा के रूप में अपना स्थान सुनिश्चित कर रही है। यह अनेक वैश्विक चुनौतियों का सामना करते हुए बाजार की भाषा बनने हेतु अग्रसर है। अमेरिका, चीन, जापान जैसे विकसित एवं विकासशील देश इसी भाषा के माध्यम से वैश्विक बाजार में अपनी पैठ बनाना चाह रहे हैं। अब यह भाषा, भाषा–विज्ञान की तथा व्याकरण की सीमा को लाँघ कर कल–कारखानों में कामकाज, रोजगार एवं जीविका की भाषा बनती जा रही है। अब यह सूचना प्रौद्योगिकी, विधि–विज्ञान, चिकित्सा, कृषि–विज्ञान, शेयर बाजार, बैंक–बीमा, पत्रकारिता, नाट्य–लेखन ,अभियान्त्रिकी, भूविज्ञान, मौसम विज्ञान, शिल्प–उद्योग ,खगोलशास्त्र, पर्यटन, पर्यावरण विज्ञान इन सब के विकास एवं अभिव्यक्ति का माध्यम बनती जा रही है। अब यह अनुवाद मूलक भाषा से ऊपर उठकर प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप लेती जा रही है। लेखन, सम्पादन, फीचर्स, समाचार वाचन ,गोष्ठी– संगोष्ठी, व्यापार–वाणिज्य आदि में व्यवहार की भाषा बनती जा रही है। अब यह न केवल शिक्षा के क्षेत्र में अपितु सरकारी व अर्ध सरकारी कार्यालयों चिट्ठी–पत्री, लेटर–हेड, परिपत्र, राजपत्र, अधिसूचना, अनुस्मारक, प्रेस–विज्ञप्ति, निविदा में भी व्यापक स्तर पर प्रयुक्त की जा रही है। न्यायालय में प्रामाणिक भाषा के रूप में इसके प्रयोग की माँग एक सकारात्मक कदम है, क्योंकि आज आज़ादी के सात दशक का लम्बा समय बीत जाने के बाद भी हमारी अपनी भाषा में न्याय प्रणाली कार्य करने में सक्षम नहीं हो पा रही है। उसमें उर्दू, फारसी, अंग्रेजी के शब्द ही नहीं है अपितु न्याय की अंग्रेजी प्रतिलिपि ही प्रामाणिक मानी जाती है। उसका केवल हिन्दी अनुवाद मात्र ही प्रकाशित हो पाता है। विवाद की स्थिति में अंग्रेजी प्रतिलिपि ही मान्य होता है।

हिन्दी सिनेमा जनसंचार का एक सशक्त माध्यम है, जो विश्व स्तर की समस्त विचार एवं संवेदनाओं को करीब लाने का प्रयास करता है। साथ ही राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक ,सांस्कृतिक गुत्थियों को सुलझाने में सहायक होता है। सिनेमा चौसठ कलाओं का सुन्दर समन्वय करने वाली स्वयं पैसठवीं कला है। ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, सामाजिक संघर्ष, क्रांति, उत्थान और पतन, निर्माण और विनाश, उन्नति और अवनति को प्रतिबिम्बित करने वाली विधाओं में इसका सर्वोच्च स्थान है। नूतन विचारों और नवीन कल्पनाओं का संवहन, नवरचना निर्मिति, नवबोध, अन्याय के विरुद्ध स्वर मुखरित करना, राष्ट्रीयता की भावना का संचार करना, यहाँ तक कि जीवन के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष समस्त पक्षों को प्रभावित करने में सिनेमा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भाषा के विकास एवं प्रचार–प्रसार के लिए सुव्यवस्थित, सुसंगठित योजना और उसकी पारम्परिक शिक्षा की जितनी आवश्यकता होती है उतनी ही आवश्यकता उसके रोचक, आकर्षक और मनोरंजन पूर्ण अभिव्यक्ति की भी होती है। इस काम को सिनेमा संगीत और कैमरा बेहतरीन तरीके से अंजाम देता है।

वर्तमान में हिन्दी सिनेमा और हिन्दी फिल्मी गीतों, रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर और इंटरनेट ने हिन्दी को विश्व के कोने कोने तक पहुँचाया। केवल आकाशवाणी और दूरदर्शन ने ही नहीं अपितु बी0बी0सी0, स्टार प्लस, ज़ी टीवी, सोनी, मेट्रो चैनल, एवं डिस्कवरी चैनल ने भी हिन्दी भाषा का प्रयोग करके उसके प्रचार–प्रसार में विशेष योगदान दिया। जिसके फलस्वरूप हिन्दी भाषा की ओर विश्व भर के लोग आकर्षित हो रहे हैं। अब विदेशों में भी टीवी पर हिन्दी में विज्ञापनों की भरमार है। इस बात से तो यह पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी देश या कम्पनी को यदि विश्व बाजार में अपनी साख स्थापित करनी है तो हिन्दी का आश्रय लेना उसकी प्राथमिकता है।

हिन्दी सिनेमा ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। लोकप्रिय हिन्दी फिल्मों, धारावाहिकों एवं लघु नाटकों ने ना केवल भारतीयों को अपितु विश्व के कोने–कोने में रहने वाले प्रवासियों को भी अपनी कला, भाव एवं सामाजिक– सांस्कृतिक चित्रण द्वारा अपनी ओर आकृष्ट किया है। हिन्दी सिनेमा के माध्यम से उन्हें अपने देश की संस्कृति एवं

समाज से जुड़े होने का अवसर प्राप्त होता है। हिन्दी के महान गीतकार महेंद्र कपूर द्वारा गाए गए हिन्दी फिल्म "पूरब–पश्चिम" (1970 )का यह गीत ना केवल भारतीयों अपितु भारत के बाहर रहने वाले प्रवासियों के हृदय को भी झंकृत कर देता है तथा उन्हें आत्म गौरव से आपूरित भी करता है–

"है प्रीति जहाँ की रीति सदा, मैं गीत वही के गाता हूँ ।
भारत का रहने वाला हूँ , भारत की बात सुनाता हूँ ।।''
काले गोरे का भेद नहीं , हर दिल से हमारा नाता है ।
इस धरती पे मैंने जनम लिया , यह सोचकर मैं इतराता हूँ।।
भारत का रहने वाला हूँ ,भारत की बात सुनाता हूँ––––

सदियों की गुलामी का प्रभाव वर्तमान में भी हमारे देश और समाज के मन मस्तिष्क पर हावी है। हमारी सभ्यता–संस्कृति भाषा, आचार–विचार, रहन–सहन पर पाश्चात्य संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित हो रहा है। हम राजनीतिक गुलामी की जंजीर को तोड़ने में सफल तो हुए हैं किंतु मानसिक गुलामी को तोड़ने में विफल रहे हैं। फिल्म ''सच्चा–झूठा'' में गीतकार इंदीवर के (1970) इस गाने में भी यही दर्द झलकता है–

''तन से तो आजाद हम हो गए हैं, मन से गई ना गुलामी।
परदेसी भाषा और देश को ही, देते हैं अब तक सलामी ।।
अपनेपन का चलन हमसे छूटा.....''

किंतु इतना सब कुछ होते हुए भी जनसंचार के रूप में हिन्दी भाषा के सामने कुछ गंभीर खतरे और चुनौतियाँ भी हैं। इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया में भाषा के प्रति बेहद लापरवाही और उसके साथ अनाचार का एक नया युग आरम्भ हो गया है और समस्त राजनीति और मीडिया में इसके प्रति कोई प्रतिरोध के स्वर परिलक्षित नहीं हो रहे हैं । सभी अपने हित साधन में संलग्न हैं। जिस तीव्र गति से भाषा के स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है वह मानक हिन्दी के लिए सबसे बड़े खतरे के रूप में उभर कर सामने खड़ा है। यद्यपि भाषा में परिवर्तन अवश्यम्भावी है और परिवर्तन भाषा को उत्तरजीविता का आधार होता है किंतु यदि परिवर्तन बौद्धिक आलस्य, भाषिक लापरवाही, सामाजिक सांस्कृतिक शिथिलता के कारण आते हैं जैसा कि वर्तमान में हो रहा है तो उनसे भाषा की अपनी पहचान खो जाने का संकट पैदा हो जाता है। जिस प्रकार दाल में नमक खाने का स्वाद बनाता है उसी प्रकार हिन्दी में विदेशी भाषा के शब्दों का प्रयोग उसके सौंदर्य और अभिव्यक्ति क्षमता में वृद्धि करता है। किंतु यदि दाल में नमक की इतनी ज्यादा मात्रा हो जाए की दाल का अस्तित्व ही नगण्य रहे तो खाने का स्वाद समाप्त हो जाता है उसी प्रकार यदि हिन्दी में अंग्रेजी आदि के शब्द ही नहीं अपितु बड़े–बड़े वाक्य प्रयोग होने लगें और देवनागरी के बजाय रोमन लिपि में हिन्दी शब्दों को लिखा जाने लगे तो निश्चित ही यह समझ लेना चाहिए कि हिन्दी का अस्तित्व खतरे में है। यदि हमारी भाषा खतरे में होगी तो हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगना अवश्यम्भावी है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, एवं अवहट्ट आदि भाषाओं ने जिस संकट का सामना किया हिन्दी के समक्ष उससे भी बड़ा संकट होगा क्योंकि इसे अपनी सांस्कृतिक विरासत वाली भाषाओं का सामना नहीं करना है बल्कि तकनीकी भाषा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा, व्यापार की भाषा अंग्रेजी और उसके लिपि रोमन से सामना करना है। मीडिया, संचार और शिक्षा में इसके प्रभाव को स्पष्ट देखा जा सकता है।

वरिष्ठ पत्रकार अशोक वाजपेई ने भी इसी बात की ओर संकेत करते हुए कहा है– 'राजभाषा के निहायत गैर मुहावरेदार और अनुवादजीवी रूप ने अगर हिन्दी को एक स्तर पर उसकी मटमैली गंध से काटकर बनावटी बनाने की कोशिश की तो आज का मीडिया अधिकांशतः उसे घटिया हालांकि चिकनी–चुपड़ी अंग्रेजी का गरीब बिरादर बनाने पर तुला है। अच्छे और साफ–सुथरी हिन्दी अब साहित्य के अलावा सार्वजनिक जीवन के प्रायः हर एक क्षेत्र से गायब होती जान पड़ती है।'

**उपसंहार**

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि वर्तमान युग सूचना एवं संचार के विस्फोट का युग है। जो भाषा सूचना, संचार और तकनीकी क्षेत्र में जितनी समृद्ध होगी उसका वैश्विक आधार उतना ही मजबूत होगा। इसलिए हिन्दी को मूल्यों के संरक्षण के साथ–साथ सूचना, संचार तकनीक, शिक्षा, व्यापार तथा रोजगार की भाषा बनाने का प्रयास करना होगा। क्षेत्र, धर्म, वर्ग और राजनीति की भावना से ऊपर उठकर देश की सरकार एवं शासन–प्रशासन को हिन्दी भाषा के अनिवार्य प्रयोग हेतु शासनादेश पारित करना होगा। ईमानदारी से इसे राजभाषा के रूप में स्वीकार करना होगा। इसे सूचना, तकनीकी, विज्ञान एवं शिक्षा की अनिवार्य भाषा के रूप में विकसित करना होगा। समस्त भारतवासियों को भारत की भाषा हिन्दी को आत्म सम्मान, आदर भाव और राष्ट्र के गौरव की भाषा के रूप में स्वीकार करना होगा। फिर वह दिन दूर नहीं कि हिन्दी केवल भारत ही नहीं अपितु विश्व में राज करेगी और भारत जगत–गुरू के रूप में पुनः प्रतिष्ठित हो सकेगा।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *भानावत, डॉ0 संजीव–पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम, पृष्ठ–152, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, जयपुर, 2000 ई0।*
2. *हिन्दी विकीपिडिया http://hi.m.wikipedia.org>wiki*
3. *दिवाकर, डॉ0 महेश चन्द्र, (सम्पादक): विश्व पटल पर हिन्दी, अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद, उ0प्र0, पृष्ठ–395, संस्करण मई–2015।*
4. *मृगेश, डॉ0 मणिक : भूमण्डलीकरण, निजीकरण व हिन्दी, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2000 ई0।*

5. *पाण्डेय, डॉ0 कैलाश नाथः प्रयोजन मूलक हिन्दी की नयी भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007 ई0।*
6. *सूद डॉ0 हरमोहन लाल एवं डॉ0 देवेन्द्र कुमारः हिन्दी भाषा की प्रयोजनमूलकता एवं आयाम, वागीश प्रकाशन, जालन्धर–2010।*
7. *आलोक, डॉ0 ठाकुर दत्त शर्मा, हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली–2009 ई0।*
8. *डॉ मधुबालाः कम्युनिकेशन टुडे बीटिंग बाइलिंगुअल मीडिया क्वर्टरली–vol-18, no.-1 (जनवरी–मई 2016)*
9. *आशुतोष कुमार एवं डॉ रचना गंगवार( कम्युनिकेशन टुडे, 29 जून, 2015*
10. *डॉ0 हर्षदेवः उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक, पृष्ठ–11, वाणी प्रकाशन , दिल्ली, 2004 ई0।*
11. *वही, पृष्ठ–11*
12. *जानसन– द मास मीडिया एण्ड माडर्न सोसाइटी, पृष्ठ–89।*
13. *डॉ0 नगेन्द्रः हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ–59, मयूर पेपर बैक्स प्रकाशन , नोएडा, 1996 ई0।*
14. *वही, पृष्ठ–80*
15. *नहि पराग नहि मधुर मधु, नहि विकास एहि काल।*
16. *अली कली ही सौं विंध्यौ, आगे कौन हवाल।।*
17. *बहारी सतसई–बिहारी*